BA I, Paper I

General Psy.

Topic – प्रत्यक्षीकरण में संलग्न प्रक्रियाएँ – Process involved in perception.

प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है इसमें निम्नलिखित प्रक्रियाएँ होती हैं:

(1) ग्राहक प्रक्रियाएँ (Receptor process) – प्रत्यक्षीकरण वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाओं का होता है यह तभी संभव होगा जब वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाओं को ग्रहण किया जाये। अतः ग्राहक प्रक्रिया प्रत्यक्षीकरण का आधार होती है जब कोई उत्तेजना वातावरण में उपस्थित होती है तब वह संबंधित इन्द्रिय ग्राहक के सम्पर्क में आती है इसके फलस्वरूप इन्द्रियों में स्थित ग्राहक कोष उत्तेजित होकर स्नायुप्रवाह उत्पन्न करते हैं। जो ज्ञानवाही तंतुओं द्वारा सुषुम्ना से होते हुए मस्तिष्क के ज्ञानवाही या संवेदी क्षेत्र में पहुँचते हैं इसके बाद साहचर्य स्नायुकोश की सहायता से उस उत्तेजना के अर्थ का ज्ञान होता है उत्तेजनाओं के ग्राहक इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किये जाने और स्नायुप्रवाहों के मस्तिष्क तक पहुँचने तक की सम्पूर्ण क्रिया

Page 2

को ग्राहक प्रक्रिया कहा जाता है। उदाहरण के लिए दृश्य उत्तेजनाओं को आँखें ग्रहण करती हैं, ध्वनि को कान और गंध को नाक। इन ग्राहक इन्द्रियों द्वारा उपयुक्त उत्तेजनाओं के ग्रहण करने के फलस्वरूप उत्पन्न स्नायु प्रवाह ज्ञानवाही तंतुओं द्वारा मस्तिष्क के उपयुक्त संवेदी क्षेत्र में पहुँचते हैं और तब हमें क्रमशः दृश्य वस्तु, ध्वनि, गंध आदि उत्तेजनाओं का संवेदी अनुभव होता है।

(2) प्रतीकात्मक प्रतिक्रियाएँ - Symbolic process

प्रत्यक्षीकरण की क्रिया में ग्राहक प्रक्रियाओं के बाद प्रतीकात्मक प्रक्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। यह उस मानसिक प्रक्रिया को कहते हैं जो हमें किसी उत्तेजना के द्वारा पूर्व अनुभवों को जागृत करती है। वातावरण में हम जिन उत्तेजनाओं के सम्पर्क में आते हैं उनसे प्राप्त अनुभव ~~सांस्कारिक~~ संस्कारिक आकृतियों अथवा स्मृतिचिन्हों के रूप में मस्तिष्क में संचित होते हैं।

किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण प्रतीकात्मक प्रक्रिया पर निर्भर करता है। जब हम किसी वस्तु को देखते हैं या किसी आवाज को सुनते हैं तो उसके प्रतीक जो हमारे मस्तिष्क में पूर्व अनुभवों के सांस्कारिक आकृति या स्मृतिचिन्हों अथवा प्रतिमाओं के रूप में विद्यमान रहते हैं/ जो मस्तिष्क

होता उन्हीं के अनुरूप उन वस्तुओं ध्वनि का प्रत्यक्षीकरण होता है।

(3) भावात्मक प्रक्रियाएँ एवं लालित्य अनुभव - Affective process and Aesthetic Experience

किसी वस्तु को देखने या सुनने के पश्चात् स्वाभाविक रूप से व्यक्ति में उस वस्तु के प्रति सुखद या दुःखद भाव उत्पन्न होते हैं जब हम वस्तु के प्रति सन्तुष्टि (Satisfaction) असन्तुष्टि (dissatisfaction) या तटस्थता (indifference) की प्रक्रियाओं का प्रादुर्भाव होता है व्यक्ति में होने वाली इन्हीं प्रक्रियाओं को भावात्मक प्रक्रियाएँ कहते हैं।

(4.) एकीकरण की प्रक्रिया (Process of Unification)

प्रत्यक्षीकरण हमेशा इकाई रूप में होता है अर्थात् जब हम किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तब उस वस्तु के विभिन्न अंगों या भागों का अलग-अलग ज्ञान प्राप्त करते हैं नहीं करते हैं बल्कि उनके सभी अंगों भागों को संगठित कर समग्र रूप में ज्ञान प्राप्त करते हैं क्योंकि मस्तिष्क में इन्हें एक साथ मिलाने वाली एकीकरण की प्रक्रिया होती है।

For B.A (I) Psychology (H)

By
Kumar Patel
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara